सुरभि:

कक्षा – 7

सत्र 2019-20

|  |  |  |
| --- | --- | --- |
|   | DIKSHA एप कैसे डाउनलोड करें? |  |
| विकल्प 1: अपने मोबाइल ब्राउज़र पर diksha.gov.in/app टाइप करें।विकल्प 2: Google Play Store में DIKSHA NCTE ढूंढ़े एवं डाउनलोडबटन पर  tap करें। |

मोबाइल पर QR कोड का उपयोग कर डिजिटल विषय वस्तु कैसे प्राप्त करें

|  |
| --- |
| DIKSHA को लांच करें—> App की समस्त अनुमति को स्वीकार करें—>उपयोगकर्ता Profile का चयन करें |

|  |  |  |
| --- | --- | --- |
|  |  |  |
| पाठ्यपुस्तक में QR Code कोScan करने के लिए मोबाइल मेंQR Code tap करें। | मोबाइल को QR Code पर केन्द्रित करें। | सफलScan के पश्चातQR Code से लिंक की गई सूची उपलब्ध होगी |

डेस्कटॉप परQR Codeका उपयोग कर डिजिटल विषय-वस्तु तक कैसे पहुँचें

|  |  |
| --- | --- |
| 1-QR Code के नीचे 6 अंकों काAlphaNumeric Codeदिया गया है। | ब्राउजर में diksha. gov.in/cgटाइप करें। |
| सर्च बार पर 6 डिजिट का QRCODE टाइप करें। | प्राप्त विषय-वस्तु की सूची से चाही गई विषय-वस्तु पर क्लिक करें। |

निःशुल्क वितरण हेतु

**राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर**

**प्रकाशन वर्ष - 2019**

राज्य-शैक्षिक-अनुसंधान और प्रशिक्षण-परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर

**-ः मार्गदर्शन:-**

 1. डॉ. रमाकान्त अग्निहोत्री, प्राध्यापक

 भाषा विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली

 2. डॉ. मनीषा पाठक, सेवा निवृत्त प्राचार्या

 3. डॉ. तोयनिधि वैष्णव, प्राध्यापक शा.दू. श्री वैष्णव

 स्नातकोत्तर संस्कृत महाविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

**-ः संयोजक:-**

डॉ. विद्यावती चन्द्राकर

**-ः विषय समन्वयक एवं सम्पादक:-**

श्री बी.पी. तिवारी, सहायक प्राध्यापक, एस.सी.ई.आर.टी.,रायपुर

**-ः लेखक समूह:-**

श्री बी.पी. तिवारी, श्री आर.पी. मिश्रा, श्रीमती श्वेता शर्मा, श्री रमेश कुमार पाण्डेय

**-ः चित्रांकन:-**

राजेन्द्र सिंह ठाकुर, रेखराज चौरागड़े, समीर श्रीवास्तव

**-ः पृष्ठसज्जा:-**

रेखराज चौरागड़े

**-ः आवरण पृष्ठ:-**

श्रीमती मंजुषा बेडेकर

**-ः सहयोग:-**

आसिफ, भिलाई, सुरेश साहू, मुकुन्द साहू

**प्रकाशक**

छत्तीसगढ़ पाठ्यपुस्तक निगम, रायपुर (छ.ग.)

**मुद्रक**

मुद्रित पुस्तकों की संख्या - ........................

**प्राक्क्थन**

 शिक्षण में पाठ्यपुस्तकों की उपादेयता महत्वपूर्ण सहायक उपकरण के रूप में होती है। इसके माध्यम से छात्रों के व्यवहार में वांछित परिवर्तन हेतु प्रयास किया जाता है, जिससे उन्हें नए ज्ञान एवं अनुभवों की सम्प्राप्ति सुगमतापूर्वक हो जाती है। संस्कृत विषय की नवीन पाठ्यपुस्तकों का सृजन छत्तीसगढ़ राज्य की आवश्यकताओं एवं अपेक्षाओं के अनुरूप किया गया है।

 हमारी शिक्षा में संस्कृत का विशेष महत्व है। भारतीय संस्कृति के संरक्षण तथा हिन्दी भाषा और साहित्य के सम्यक ज्ञान के लिए सम्प्रति संस्कृत का ज्ञान परमावश्यक है। कक्षा सातवी में पठन-पाठन की व्यवस्था को ध्यान में रखते हुए यह पाठ्यपुस्तक नवीन पाठ्यक्रम पर आधारित है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के अनुरूप विद्यालयों के प्रत्येक स्तर पर न्यूनतम अधिगम-स्तर की प्राप्ति पर बल दिया गया है। पाठ्य-सामग्री का चयन छात्रों की मानसिक क्षमता व रुचि को ध्यान में रखकर किया गया है। संस्कृत-शिक्षण को अधिक सरल, सुबोध एवं व्यवहारपरक बनाने की दृष्टि से पाठ्य सामग्री का चयन सामान्य जनजीवन में क्रियाकलापों के आधार पर किया गया है। इस पाठ्यपुस्तक में निम्नलिखित बिन्दुओं पर विशेष बल दिया गया है -

1. पाठों की सरल भाषा व प्रस्तुतीकरण की रोचक विधि।

2. भाषाई कौशलों का विकास।

3. संवाद वाक्य एवं उसकी शब्दावली अगली कक्षाओं में छात्रों की समझ को पुष्ट बनाएगी।

4. पाठ्यपुस्तक छात्रों में अपने राष्ट्र एवं संस्कृति के प्रति समादर एवं भावनात्मक एकता उत्पन्न करने पर पुनर्बलन देगी।

5. आधुनिक वैज्ञानिक अविष्कार सङ्गणक (कम्प्यूटर), पर्यावरणगीत, छत्तीसगढ़ के पर्व, पौराणिक कथा, छत्तीसगढ़ की लोकभाषा, छत्तीसगढ़ के धार्मिक स्थल, गीताऽमृत, चाणक्य के वचन, ईदमहोत्सव, राष्ट्रीय पर्व, महापुरूषों की जीवनी, नीतिश्लोक, सूक्तियाँ आदि का समावेश इसमें प्रासंगिकता व नवीनता लाएगी।

6. प्रत्येक पाठ के अन्त में अभ्यास के प्रश्न दिए गए हैं। इस बात का ध्यान रखा गया है कि भावबोध एवं क्रियात्मक अभ्यास के प्रश्नों द्वारा पाठ में निहित मर्म, (अवधारणाएँ) भाषा-शैली एवं शिक्षण-विधियों के विविध पक्ष ग्राह्य एवं अभिव्यक्ति क्षमता दे सकें। फलस्वरूप वे अपनी वर्तनी, उच्चारण, शब्द एवं वाक्य रचना संबंधी क्षमताओं एवं प्रवीणताओं में निखार ला सकें।

7. पाठ्यपुस्तक में छात्र-क्रियाकलाप (गतिविधियों) पर विशेष ध्यान (बल) दिया गया है।

8. पाठ्य सामग्री को रोचक बनाने हेतु आवश्यक चित्रों का भी यथास्थान समावेश किया गया है।

 बच्चों के मन में संस्कृत भाषा के प्रति रुचि तथा सृजनात्मक अभिव्यक्ति क्षमता विकसित करने में शिक्षण विधा की महती भूमिका होती है। अतः कक्षाशिक्षण के समय पाठ्य सामग्री का रचनात्मक उपयोग परमावश्यक है। पाठ्यपुस्तक विकास की सहभागिता आधारित प्रक्रिया के अन्तर्गत विषय विशेषज्ञों के गहन विचारविमर्श के उपरान्त पाठ्यपुस्तक का विकास किया गया है। संस्कृत पाठ्यपुस्तक के उन सभी विशेषज्ञों के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ। जिनके ज्ञान, अनुभव और सतत् परिश्रम से इस पुस्तक को आकार मिला है।

 स्कूल शिक्षा विभाग एवं राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, छ.ग. द्वारा शिक्षकों एवं विद्यार्थियों में दक्षता संवर्धन हेतु अतिरिक्त पाठ्य संसाधन उपलब्ध कराने की दृष्टि से Energized Text Books एक अभिनव प्रयास है, जिसे ऑन लाईन एवं ऑफ लाईन (डाउनलोड करने के उपरांत) उपयोग किया जा सकता है। ETBs का प्रमुख उद्देश्य पाठ्यवस्तु के अतिरिक्त ऑडियो-वीडियो, एनीमेशन फॉरमेट में अधिगम सामग्री, संबंधित अभ्यास, प्रश्न एवं शिक्षकों के लिए संदर्भ सामग्री प्रदान करना है।

संचालक

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

छत्तीसगढ़, रायपुर

**पाठ्यक्रम**

**पाठ्य विषय**

(1) संस्कृत पाठ्यवस्तु को रोचक एवं आनन्ददायी बनाने के लिए गद्य, पद्य, कथा तथा संवाद पाठ को समामेलित किया गया है।

(2) कक्षा 7 संस्कृत में अध्ययन-अध्यापन की व्यवस्था को ध्यान में रखते हुए प्रयाणगीत, छत्तीसगढ़ के पर्व, कम्प्यूटर (संगणक) रायपुर नगर चाणक्य के वचन, ईदमहोत्सवः, गीताऽमृतम्, भोरमदेव, आदर्शछात्र, छत्तीसगढ़ की लोकभाषाएँ, संस्कृत में पत्र लेखन संस्कृत भाषा का महत्तव, वसन्त वर्णन, पौराणिक कथा, पर्यावरण, नीति श्लोक, महापुरूषों की जीवनी, होलिकोत्सव व संस्कृत सूक्तियों को समावेशित किया गया है।

**कौशलपरक दक्षताएँ -**

**1 श्रवण -**

 (1) संस्कृत के सरल गद्यांशों एवं पद्यों को सुनकर अर्थ समझ सकेगा।

 (2) कक्षागत विषयवस्तु को ध्यानपूर्वक सुनकर तद्नुरूप क्रिया कर सकेगा।

 (3) संस्कृत के गद्य व पद्य खण्डों को सुनकर उनका भाव ग्रहण कर सकेगा।

**2. भाषण -**

 (1) संस्कृत में सरल प्रश्नोत्तर कर सकेगा।

 (2) संस्कृत पाठ्यपुस्तक के अन्तर्गत लघु पठित संस्कृत-कथाएँ सुना सकेगा।

**3. वाचन -**

 (1) संस्कृत गद्य व पद्य का शुद्ध वाचन कर सकेगा।

 (2) संस्कृत पद्यों का उचित लय के साथ पाठ कर सकेगा।

**4. लेखन -**

 (1) संस्कृत में पूछे गये प्रश्नों का उत्तर संस्कृत में लिख सकेगा।

 (2) चित्रों के आधार पर संस्कृत में वाक्य बना सकेगा।

 (3) कथानक या घटना के आधार पर दिये गये वाक्यों को क्रम से लिख सकेगा।

**5. चिंतन -**

 पाठ्यवस्तु को पढ़कर अथवा सुनकर छात्र उसमें विद्यमान गुणों के विषय में अपना मत रख सकेगा।

**6. भाषिकतत्व-क्षमता -**

 (1) पठित विषय पर सरल संस्कृत में पाँच वाक्य लिख सकेगा।

 (2) विशेष्य के अनुसार विशेषण का वचन परिवर्तन कर सकेगा।

**7. अभिरुचि -**

 दी गई संस्कृत सूक्तियों एवं सुभाषितों को कण्ठस्थ कर सुना सकेगा।

**संस्कृत व्याकरण**

**संज्ञा -**

**(1) ऋकारान्त पुल्लिङ्ग -** पितृ, कर्तृ

**(2) इकारान्त स्त्रीलिङ्ग -** मति, गति

**(3) इकारान्त पुल्लिङ्ग -** रवि, पति, हरि, गिरि, अग्नि, अतिथि, मुनि, कपि, नृपति, विधि,
 व्याधि, उदधि, वारिधि आदि ।

**(4) ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग -** जननी, वाणी, गौरी, नारी, भवती, सखी, पत्नी, राज्ञी, नगरी,
 सहचरी, विदुषी, स्त्री आदि।

**(5) उकारान्त पुल्लिङ्ग -** भानु, साधु, गुरु, विष्णु, प्रभु, शिशु, विधु, पशु, शम्भु (बाँस), भृगु, रिपु, उरु, जन्तु, मृत्यु, ऋतु, हेतु, तरु आदि।

**(6) उकारान्त नपुंसकलिङ्ग -** मधु, दारु, जानु, तालु, वस्तु आदि।

**(7) इकारान्त नपुंसकलिङ्ग -** वारि, सुरभि शुचि। अक्षि (आँख), अस्थि (हड्डी), सक्थि (जाँघ)
 और दधि (दही) शब्द के रूप कुछ भिन्न्ा चलेंगे।

**सर्वनाम -** एतद् , यद्।

**विशेषण -** संख्यावाची - (11 से 50 तक)

 एकादशः से विंशति तक संख्याओं का प्रयोग।

**कारक -** कारकों का सामान्य प्रयोग।

**क्रिया -** क्रिया का परस्मैपद एवं आत्मनेपद में प्रयोग।

**धातु -** चर्, वस्, रक्ष्, नृत्, कथ्, हृ।

 नी (नय्) दा (यच्छ्) कुप्, पा (पिब्), वद्।

**विधिलिङ् लकार -** लोट् एवं विधिलिङ् लकार का परस्मैपद एवं आत्मनेपद में प्रयोग।

**सन्धि -** स्वर, व्य**ञ्ज**न एवं विसर्ग सन्धि। स्वर सन्धि में दीर्घ स्वर सन्धि, गुण
 स्वर सन्धि, वृद्धि स्वर सन्धि, यण् स्वर सन्धि एवं अयादि स्वर सन्धि।

**समास -** समास का सामान्य परिचय - तत्पुरुष, द्विगु, द्वन्द्व, कर्मधारय, बहुब्रीहि
 तथा अव्ययीभाव समास।

**उपसर्ग -** अनु, अव, आ, उप, प्र, प्रति, सम्।

**अव्यय -** अधुना, अद्य, ह्यः, श्वः, अधः, पश्चात्, उपरि, ततः, कुतः, सर्वतः यदा, कदा, कथम्,तत्र, सर्वत्र, पुरतः पुरः पुरस्तात्, यदा, कदा, तदा, अतः, अपि, कुत्र, यत्र, च, वा, एव, अथ, अथकिम्, अलम्, इह, क्व, खलु, तत्, तदानीम्, तर्हि तावत् न, ध्रुवम् नहि, नूनम्,परम्,परितः, पुनः, पुरा, पृथक्, दिवा, विष्ट्या, प्रतिदिनम, प्रत्युत्, प्राक्, प्रातः, सत्वरम् बहिः, वृथा, मा, उच्चैः, धिक् इतस्ततः, यथा, तथा, प्रायः, स्वस्ति, वै, विना, यत्, सद्यः, समम्, सम्प्रति, सर्वतः, सर्वदा, साक्षात्, सायम् हि।

**अनुक्रमणिका**

**क्रमांक पाठ पृष्ठ क्रमांक**

 **वन्दना** 1

1. प्रयाणगीतम् गीतम् पाठः 2

2. छत्तीसगढ़स्य पर्वाणि गद्यम् पाठः 4

3. सङ्गणक संवादः पाठः 7

4. रायपुरनगरम् गद्यम् पाठः 9

5. चाणक्यवचनानि पद्यम् पाठः 11

6. ईदमहोत्सवः संवादः पाठः 13

7. गीताऽमृतम् पद्यम् पाठः 15

8. भोरमदेवः गद्यम् पाठः 17

9. आदर्शछात्रः संवादः पाठः 19

10. छत्तीसगढ़स्य-लोकभाषा गद्यम् पाठः 21

11. पितरं प्रति पत्रम् गद्यम् पाठः 24

12. संस्कृत भाषायाः महत्तवम् गद्यम् पाठः 25

13. सत्सङ्गतिः गद्यम् पाठः 27

14. श्रवणकुमारस्य कथा पौराणिककथा 29

15. पर्यावरणम् पर्यावरणम् पाठः 31

16. नीतिनवनीतानि पद्यम् पाठः 33

17. महात्मागाँधी गद्यम् पाठः 35

18. होलिकोत्सवः गद्यम् पाठः 37

19. सूक्तयः 39

20. परिशिष्टव्याकरणम् 41